THE

PARLIAMENTARY DEBATES

OFFICIAL REPORT

IN THE FORTY-SIXTH SESSION OF THE RAJYA SABHA

Commencing on the ioth February, 1964/the 21st Magha, 1885 {Saka)

RAJYA SABHA

Monday, *the* 10th *February,* 19t>4/the 21st Magha, 1885 (Saka)

The House met at twelve oi the clock, THE DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

ADDRESS BY VICE-PRESIDENT DISCHARGING THE FUNCTIONS OF THE PRESIDENT

SECRETARY, Madarn, I beg to lay on the Table a copy of the Address of the Vice-President, discharging the functions of the President, to both the Houses of Parliament assembled together on the 10th February, 1964.

(Text of the Vice-President's *Address in Hindi).*

संसद् के सदस्यगण, संसद् के नये इजलास का कायभार उठाने के लिए एक बार फिर मैं आप सब का स्वागत करता हूं ।

२. हाल ही जो साल खत्म हुआ है उसमें भारत की सरकार और जनता को कुछ ऐसे मसलों का सामना करना पड़ा जो बड़े और पेचीदा थे । मगर तरह-तरह की कठिनाइयों और रुकावटों के बावजूद हम अपने लक्ष्य की तरफ बराबर बढ़ते रहे हैं, जो यह रहा है कि अपने देश में हम लोकतंत्रीय तरीकों से समाजवादी समाज की स्थापना करें और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में शांति और सहयोग बनाए रखें ।

३. हमारी तीसरी पंचवर्षीय योजना ने तीन वर्षों में जो प्रगति की उसका मूल्यांकन करने पर योजना कमीशन को पता चला है कि बाकी के दो वर्षों में बहुत बड़ी मंजिल त करनी है, और अगर हम चाहते हैं कि हमारी उम्म.दें पूरी हों तो हम को जी-जान से कोशिश करनी पड़ेगी ।

४. दोबारा मूल्यांकन करने पर यह जरूरी था कि हम उन क्षेत्रों पर ज्यादा ध्यान देते जिन में लगता है कि हम अपने लक्ष्य से पीछे रह गए हैं लेकिन इसके माने यह कभी नहीं है कि जो प्रगति हमने की है या जो सफलता हमें मिली है उसे हम कम कर के देखें या उसकी तरफ से आंखे फेर लें । औद्योगिक उत्पादन बराबर बढ़ता रहा है । ऐसी आशा की जाती है कि पिछले साल जितना औद्योगिक उत्पादन हुआ था, १९६३-६४ में उससे ७–८ प्रतिशत अधिक होगा । कोयला और इस्पात जैसे बुनियादी उद्योगों में और प्रगति हुई है । इस्पात के कारखाने लगभग पूरी ताकत से उत्पादन कर र हैं । देश के कुछ भागों में बिजली की कमी महसूस की गई है लेकिन कुल मिलाकर ज्यादा बिजली पैदा की गई है और परिवहन की कठिनाइयां भी कम हुई हैं । निर्यात से हमारी आमदनी बढ़ी है और हमारे मित्र देश हमें जो बाहरी सहायता देते रहे हैं उस से हमारे विदेशी मुद्रा-कोष की हालत सुधरी है और देश को जो

अदायगियां करनी हैं उनके कारण पिछले साल उस पर जितना दबाव पड़ रहा था इस साल नहीं पड़ रहा है ।

५. पब्लिक सेक्टर के प्रतिष्ठानों ने अच्छी-खासी तरक्की की है । १६ नवम्बर, १९६३ को चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स ने भारत में बना पहला ए० सी० बिजली का इंजन चालू किया । भोपाल के हैवी एलेक्ट्रिकल प्लांट का उत्पादन बढ़ गया है । नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन ने किरीबुरू की लोहे की खानों का विकास क़रीब-क़रीब पूरा कर लिया है । आयल ऐंड नेचुरल गैस कमीशन ने गुजरात में तेल और गैस के काफ़ी बड़े ज़खीरों का पता लगा लिया है । ट्राम्बे के एटामिक एनर्जी इस्टेबलिशमेंट ने रेडियो आइसोटोप्स का निर्यात करना शुरू कर दिया है ।

६. कई ऐसे नए प्रोजेक्ट हैं जिनको अमल में लाने की दर्जे-ब-दर्जे तैयारियां हो रही हैं और इन से आने वाले वर्षों में हमारी आर्थिक व्यवस्था को नई शक्ति मिलेगी । पब्लिक सैक्टर के तीन इस्पात के कारखानों को और बड़ा करने की योजना चल रही है । दुर्गापुर के आयल ऐंड टूल स्टील प्लांट में काम हो रहा है । बोकारो में इस्पात का कारखाना खोलने के काम की शुरूआत कर दी गई है । तारापुर और राना प्रताप सागर, राजस्थान, में एटमी शक्ति के स्टेशनों को स्थापित करने के लिये क्रमशः संयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा से क़रार किए जा चुके हैं । जब कुछ और ऐसे कारखाने बन कर तैयार हो जायेंगे, जिनके लिए ज़रूरी विदेशी सहायता ली जा चुकी है, तब हम अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य से बहुत पीछे न रहेंगे । साथ ही हमारी चौथी योजना के शुरू के वर्षों में हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ और बिजली के कारख़ाने खोलने के सम्बन्ध में पहले से कारंवाई शुरू कर दी गई है ।

७. ये बातें संतोषजनक हैं, फिर भी हमारा आर्थिक विकास उस गति से नहीं हो रहा है जो हमारी योजना का लक्ष्य था । इसकी ख़ास वजह है खेती की पैदावार का घटना, जो १९६२-६३ में ३.३ प्रतिशत कम हुई है । तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान खेती को यके-बाद-दीगरे ख़राब मौसम का सामना करना पड़ा है । हमारे सामने आज सब से ज़रूरी काम यह है कि खेती की पैदावार को बराबर बढ़ाया जाय ।

८. तीसरी योजना के पहले दो सालों में खेती के काम को बढ़ाने के लिये बराबर कोशिश की गई है । लगभग ६० लाख एकड़ नई जमीन को सिंचाई की सुविधा पहुंचाई गई है । कोशिश हो रही है कि चालू वर्ष में इसके अलावा ५५ लाख एकड़ से ज्यादा जमीन को सिंचाई की सुविधा दी जाय । छोटे पैमाने की सिंचाई, भूमि-संरक्षण और खेती की पैदावार को बढ़ावा देने के लिए राज्यों को १६.१५ करोड़ रुपये और दिये गए ।

९. ग़ल्ले की पैदावार में जो कमी आई है उसका कीमतों के स्तर पर बुरा असर पड़ा है । सरकारी गोदामों से ज्यादा ग़ल्ला निकाल कर, जहां मुमकिन हो, सस्ते अनाज की और ज्यादा दुकानें खोलकर, ग़ल्ले को ठीक जगहों पर पहुंचा कर, और उधार देने की नीति बरतकर, हर तरह कोशिश की गई है कि ग़ल्ले का दाम चढ़ने न पाये । अप्रैल, १९६३ से फ़ैक्टरी से निकलने पर चीनी के दाम तथा उसके वितरण पर फिर से कंट्रोल लगा दिया गया है ।

१०. जो बात खेती की पैदावार के लिए कही जा सकती है वही औद्योगिक उत्पादन के लिए भी ठीक है कि आखिर में चलकर दामों में ठहराव तभी आयेगा जब पैदावार

इतनी बढ़ जाय कि उससे बढ़ती हुई मांग पूरी की जा सके । खेती के क्षेत्र को मजबत बनाने और खेती की पैदावार को बढ़ाने के लिए जो उपाय हमने किये हैं उनका ज़िक्र मैं कर चुका हूं । इन तथा और दूसरे उपायों से, साथ ही खेती की ख़ास-ख़ास फ़सलों का भाव ठीक रखने की नीति से, ऐसा समझा जाता है कि खेती की पैदावार भी बढ़ेगी और उत्पादन की क्षमता भी ।

११. औद्योगिक विकास की रफ़्तार तेज़ करने के लिए कई तरह के प्रशासन सम्बन्धी परिवर्तन किये गये हैं, काम करने के तरीक़ों को आसान किया जा रहा है, और कुछ कंट्रोलों में ढील दे दी गई है । खेती और उद्योग दोनों के लिए, खासकर सहकारी क्षेत्र और छोटे पैमाने के उद्योगों के लिए आर्थिक सहायता बढ़ाई जा रही है ।

१२. प्रशासन के काम में चुस्ती लाने के लिए और भ्रष्टाचार और बेईमानी के खिलाफ़ की गई शिकायतों पर फ़ौरन और कारगर ढंग से ध्यान देने के लिए यह तै किया गया है कि एक सेण्ट्रल विजिलेन्स कमीशन की स्थापना की जाय जिस का दर्जा, अपने क्षेत्र में, लगभग वैसा ही होगा जैसा यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन का । इसकी सालाना रिपोर्ट संसद् के दोनों सदनों के सामने रखी जाया करेगी ।

१३. जुलाई, १९६३ में हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा और पांडिचेरी की यूनियन टेरीटरी में विधान सभायें और मंत्रि-परिषदें बनाई गईं, और पिछली दिसम्बर में गोवा, दमन, दीव में भी इस तरह की सभा और परिषद् की स्थापना हुई । १ दिसम्बर, १९६३ को नागालैंड राज्य बनाया गया और जनवरी, १९६४ में उसकी विधान सभा के लिए चुनाव किये गये ।

१४. हालांकि हमारी सीमा पर लड़ाई नहीं हुई, फिर भी सारे साल चीन से ख़तरा बना रहा । कोलम्बो प्रस्तावों के बारे में चीन अभी तक अपना ज़िद्दी रवैया अपनाये हुए है और उसने हमारी सीमाओं पर अपनी फ़ौजी शक्ति बढ़ाई है ।

१५. हम शांति के क़ायल हैं और इस नीति के भी कि संसार के तमाम झगड़ों को शांतिपूर्ण तरीक़ों से हल किया जाय, फिर भी हम अपने बचाव की तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं हो सकते । इस वर्ष के दौरान हमारी फ़ौज और हवाई सेना को सुधारने और बढ़ाने के लिए बहुत से क़दम उठाये गये । हमारी हथियारबंद फ़ौजों की सभी शाखाओं में रंगरूटों की भर्ती संतोषजनक रही है लेकिन तकनीकी सेवाओं में काम करने वाले योग्य आदमियों की कमी महसूस की जा रही है । सेना में काम करने वाले लोगों की नौकरियों की शर्तों में बहुत से सुधार किये गये हैं । जो कुछ बड़े-बड़े उपाय किये गये हैं, वे ये हैं : कमीशन-प्राप्त अफ़सरों की पेंशन-दरों में संशोधन; अफ़सर-दर्जे से निचले दर्जे के जो कर्मचारी मर गये हों, उनकी विधवाओं और उन पर निर्भर लोगों को पेंशन का लाभ पहुंचाने में उदारता; और छोटी रकम की पेंशन में बढ़ोतरी ।

१६. हमारी सेनाओं को साज़-सामान से लैस करने की दिशा में हमें संयुक्त राज्य अमरीका, यूनाइटेड किंगडम और राष्ट्रमंडल के कई देशों से काफ़ी मदद मिल चुकी है और आगे और भी साज़-सामान आने को है । सोवियत समाजवादी गणतंत्र संघ की सरकार ने हमें कई सामान ढोने वाले हवाई जहाज़ और अन्य उपकरण दिये हैं और वे हमारे देश में आवाज़ की गति से तेज़ चलने वाले हवाई जहाज़ तैयार करने का कारख़ाना बनाने में हमारी मदद कर रहे हैं । इन देशों ने हमें जो सहायता दी है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं ।

१७. हमारी रक्षा सेनाएं साज़-सामान से पूरी तरह लैस रहें, इसके लिए हम चाहते हैं कि उसका ज़्यादा-से-ज़्यादा उत्पादन हमारे

ही देश में हो। हमारी रक्षा के लिए विदेशों से जिस सहायता की व्यवस्था है, उसके अतर्गत जरूरी प्लांट और मशीनें मंगाकर हम सामरिक उद्योगों में उत्पादन का आधार मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं। १९६३-६४ में आर्डनेंस फ़ैक्टरियों में १०० करोड़ रुपये से अधिक का उत्पादन होने की आशा है, जबकि १९६२-६३ में यह उत्पादन ६३ करोड़ रुपये का था और १९६१-६२ में ४१.४५ करोड़ रुपये का।

१८. अपनी घोषित नीति के अनुसार, हम दुनिया के तमाम देशों के साथ मित्रता और सहयोग का सम्बन्ध रखने की कोशिश करते रहे हैं। साथ ही हम ने शांतिपूर्ण सह-जीवन और गुटों से अलग रहने की नीति का भी पालन किया है। हमारी इस नीति का समर्थन और उसकी सराहना कई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा पश्चिम एशिया और उत्तर अफ्रीका के देशों ने की है।

१९. हमारे राष्ट्रपति को संयुक्त राज्य अमरीका, यूनाइटेड किंगडम, नेपाल, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और उनकी सरकारों तथा वहां के लोगों का प्रेम-पूर्ण स्वागत-सत्कार पाकर उन्हें बड़ी खुशी हुई है। सद्भाव और मित्रता को और बढ़ावा देने की गरज से, मैंने इथोपिया, सूडान और संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा की। इसके अलावा, हमारे कई मंत्रियों और अन्य सम्मानित व्यक्तियों ने इसी भावना से संसार के कई देशों का दौरा किया।

२०. इस वर्ष के दौरान हमारी सरकार को जिन सम्मानित अतिथियों के भारत आने पर उनका स्वागत-सत्कार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे ये हैं : महामहिम लाओस नरेश, महामहिम नेपाल नरेश और उनकी महारानी, जोर्डन के महामहिम शाह, साइप्रस गणराज्य के उप-राष्ट्रपति, संयुक्त अरब गणराज्य की कार्यकारिणी परिषद् के प्रधान, सोमाली गणराज्य के प्रधान मंत्री, नाइजीरिया संघीय गणराज्य के उत्तरी क्षेत्र के मुख्य मंत्री, न्यू साउथ वेल्स के मुख्य मंत्री, संयुक्त राज्य अमरीका के विदेश मंत्री, अर्ल माउंटबेटन आफ बर्मा, डेन्मार्क की राजकुलमान्या राजकुमारी मार्गरेट और सोवियत अन्तरिक्ष यात्री वेलेन्तीना तेरेशकोवा निकोलायवा और उनके दो साथी।

२१. प्रेसीडेंट केनेडी की हत्या का समाचार सुनकर हमें सदमा पहुंचा और दुःख हुआ। उनकी मृत्यु से भारत ने एक सच्चा मित्र खोया और दुनिया ने अमन और दोस्ती का जबर्दस्त हिमायती। हम प्रेसीडेंट जानसन के उस एलान का स्वागत करते हैं जिसमें उन्होंने कहा है कि वे तनाव कम करने और दुनिया में अमन बनाये रखने के अहम और मुश्किल काम में स्वर्गीय प्रेसीडेंट केनेडी की नीति का ही पालन करेंगे ; साथ ही वे उन देशों के आर्थिक विकास में सहयोग भी देंगे जो कम विकसित हैं।

२२. अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में जो अति उत्साहवर्धक घटनाएं हुई हैं उनमें से एक यह है कि संयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत संघ ने बाहरी अन्तरिक्ष में एटमी हथियारों पर रोक लगाने के सिद्धांत को मंजूर कर लिया है। इसे बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी स्वीकार कर लिया है। यह घटना और परीक्षण रोकने का करार निरस्त्रीकरण करने और सच्ची शान्ति स्थापित करने की दिशा में पहले अहम कदम हैं, जिन्हें उसी वातावरण में हासिल किया जा सकता है जिसमें एक-दूसरे पर भरोसा किया जा सके और एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहा जा सके। चेयरमैन ख्रुश्चेव ने प्रदेश या सीमा के झगड़ों को तय करने में शक्ति का प्रयोग न करने के बारे में एक अन्तर्राष्ट्रीय करार करने का जो प्रस्ताव किया है, उसमें निहित सिद्धांत से हम मोटे तौर पर सहमत हैं, और आशा करते हैं कि जिन प्रमुख राष्ट्रों का इनसे सरोकार हो वे परस्पर विश्वास की

भावना से इस अहम सुझाव पर एक ऐसा समझौता कर सकेंगे जो सब के लिये सन्तोष-जनक हो और सब को मंजूर हो ।

२३. नेपाल के साथ हमारे संबंध बहुत ही मजबूत और मित्रता-पूर्ण हैं और दोनों देश एक-दूसरे की समस्याओं और आकांक्षाओं को पूरी तरह समझते हैं और उनके साथ पूरी हमदर्दी रखते हैं। हम भूटान के आर्थिक और सामाजिक विकास में बराबर मदद दे रहे हैं ।

२४. महाराजा सिक्किम की मृत्यु से भारत और सिक्किम, दोनों को जो जबर्दस्त सदमा पहुंचा है वह संसद् के सदस्यों से छिपा नहीं है । उनके सुपुत्र, राज्यमान्य पाल्देन थोंडुप नामग्यल दिसम्बर, १९६३ में गद्दी पर बैठे ।

२५. हमें इस बात की खुशी है कि कुवैत को संयुक्त राष्ट्र में वह स्थान मिल गया है जिसका कि वह हकदार है । कीनिया और उगांडा की आजादी पर हमें खुशी है और इस पर भी कि अफ्रीका के दूसरे देश जल्द आजाद होने को हैं । हम चाहते हैं कि इन देशों के साथ हमारे संबंध ज्यादा से ज्यादा नजदीकी हों और हम विकास के उन बहुत से कार्यभारों में भी उनका हाथ बटा सकें जो नए आजाद मुल्कों को उठाने पड़ते हैं ।

२६. हमें उन अफ्रीका निवासियों के साथ पूरी हमदर्दी है और हम उनकी पूरी-पूरी हिमायत करते हैं जो अब भी पुर्तगाल की उपनिवेशी हुकूमत में हैं और आजादी के लिये जद्दोजहद कर रहे हैं। अफ्रीका और दुनिया के दूसरे मुल्कों के उन लोगों के साथ भी हमारी हमदर्दी है और हम उनकी हिमायत करते हैं जो दक्षिण अफ्रीकी सरकार की रंग और जाति-भेद की नीतियों को खत्म कराने की कोशिशों में लगे हैं ।

२७. जहां तक पाकिस्तान के साथ हमारा सम्बन्ध है, मुझे यह कहते हुए बड़ा अफ़सोस होता है कि पाकिस्तान की मंशा समझौता करने की कतई नहीं है । "कश्मीर और उससे जुड़े हुए दूसरे मसलों" पर दिसम्बर, १९६२ में मंत्रियों के स्तर पर बातचीत का जो सिल-सिला शुरू हुआ था वह पांच दौरों के बाद १६ मई, १९६३ को कटु वातावरण में टूट गया । सच तो यह है कि इस बातचीत के सफल होने की आशा तो तभी टूट गई थी जब पाकिस्तान ने चीन के साथ सीमा-समझौता करके कश्मीर का एक बहुत बड़ा हिस्सा चीन को दे दिया था जिस पर पाकिस्तान ने फौजी कब्जा कर रखा था । इसके बावजूद और भारत के खिलाफ चीन के साथ सांठ-गांठ करने की दूसरी कारिस्तानियों के बावजूद भी, हमारी सरकार धीरज के साथ बातचीत करती रही लेकिन इस बातचीत के पांचों दौरों ने यह बात साफ कर दी कि पाकिस्तान तर्क और तथ्य के आधार पर समझौता करना नहीं चाहता और इसके पीछे उसका मकसद सिर्फ यह है कि उसे भारत के खिलाफ प्रोपेगेंडा करने का मौका मिल सके ।

२८. इन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के बावजूद, भारत-पाकिस्तान की समस्याओं को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का रास्ता भारत खोजता रहा, और जहां तक हो सका उसने पाकिस्तान द्वारा चलाए 'भारत से नफ़रत' के आन्दोलन को भी नजर अंदाज किया । हमारे प्रधान मन्त्री ने एक बार फिर यह अपील की कि भारत और पाकिस्तान के बीच 'जंग न करने का एलान' किया जाये और साथ ही भारत और पाकिस्तान के सभी झगड़ों को शांति-पूर्ण तरीकों से हल करने की कोशिश की जाये । लेकिन प्रधान मंत्री की अपील पर कोई ध्यान नहीं दिया गया और साल के खत्म होते-होते भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध उससे भी कहीं ज्यादा खराब हो गए जितने कि वह १९६२ में थे ।

२९. दिसम्बर, १९६३ के आखिरी हफ़्ते में काश्मीर के कुछ समाज-विरोधी लोगों ने

हज़रतबल की दरगाह से पवित्र बाल चराकर जो घोर अपराध किया उस से कश्मीर और बाकी भारत के लोगों को बहुत चिन्ता हुई। लेकिन कश्मीर के अधिकारियों की सहायता करने में हमारी सरकार ने बड़ी फुर्ती से कार्रवाई की जिसके कारण पवित्र बाल मिल गया और इससे समूचे भारत के लोगों को बड़ी खुशी हुई और राहत मिली। परन्तु पाकिस्तान के अधिकारियों ने इस दुर्घटना का फायदा उठाकर पाकिस्तान में भारत-विरोधी और फ़िरकापरस्ती की भावना फैलाई जिसका नतीजा यह हुआ कि पूर्वी पाकिस्तान में कई जगहों में, जिसमें कि ढाका भी शामिल था, जोर के दंगे हुए, कानून और इन्तजाम खत्म हो गया और उसकी वजह से पूर्वी पाकिस्तान में अल्पसंख्यक जाति के कई सौ आदमी मार डाले गए और उनकी सम्पत्ति को भी बहुत नुकसान पहुंचाया गया। कलकत्ता और पश्चिम बंगाल के कुछ दूसरे इलाकों पर इन दुर्घटनाओं का बुरा असर पड़ा, लेकिन सरकार ने बलवाइयों के खिलाफ बड़ी तेजी और सख्ती से कार्रवाई की और, जाति-धर्म का खयाल किए बिना भारत के सभी नागरिकों की जान-माल की पूरी हिफाजत की। हमारे राष्ट्रपति ने यह प्रस्ताव भी रखा कि भारत और पाकिस्तान के राष्ट्रपति मिलकर दोनों देशों में रहने वाली विभिन्न जातियों से मेल-मिलाप और शांति से रहने की अपील करें और इस अपील पर कार्रवाई करने के कुछ अमली तरीके भी सुझाए लेकिन पाकिस्तान ने अब तक इन सुझावों को मानने से इन्कार ही किया है। पूर्वी पाकिस्तान में जो दंगे हुए उनमें वहां के विभिन्न इलाकों में रहने वाली अल्पसंख्यक जाति के लोगों की जान और माल का भारी नुकसान हुआ। नतीजा यह हुआ है कि आज हमारे सामने पूर्वी पाकिस्तान से बहुत बड़ी तादाद में अल्पसंख्यक जाति के लोगों के भारत आने की समस्या खड़ी हो गई है।

३०. संसद् सदस्यगण! मैंने आप लोगों के सामने पिछले वर्ष देश की खास-खास कामयाबियों और मसलों का एक ब्यौरा रखा है। हमें जो काम करने हैं और हमारे ऊपर जो जिम्मेदारियां हैं, उनका एक छोटा सा खाका मैंने आपके सामने पेश किया है। इन पर आप अच्छी तरह गौर करें, इन्हें समझें और इन्हें पूरा करने और निभाने में अपना ज्यादा से ज्यादा सहयोग दें। हमारी सरकार हर तरह से अपने देश और देश के निवासियों की आजादी और इज्जत को बनाये रखने की, देश में एकता और खुशहाली बढ़ाने की, और एक ऐसा लोकतंत्रीय और समाजवादी समाज बनाने की कोशिश करती रहेगी जिसमें शांतिपूर्ण तरीकों और सबकी रजामंदी से प्रगति की जा सके।

३१. १९६३ के दौरान संसद् ने ५८ बिल पास किए थे। १९ पिछले बिल अभी बाकी हैं जिन पर आपको विचार करना है। विचार के लिए जो बिल आप के सामने रखे जाएंगे उनमें ये भी शामिल होंगे :—

(१) कंपनी (संशोधन) बिल।

(२) भारतीय फ़सल बीमा बिल।

(३) भार एवं माप-मानक (संशोधन) बिल।

(४) भारतीय रेलवे (दूसरा संशोधन) बिल।

(५) केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली पर लागू बम्बई सहकारी समिति अधिनियम, १९२५ को खत्म करने और कुछ संशोधनों के साथ पंजाब सहकारी समिति अधिनियम, १९६१ दिल्ली में लागू करने से संबद्ध बिल।

(६) विदेशी मुद्रा नियमन (संशोधन) बिल।

(७) संविधान (अट्ठारहवां संशोधन) बिल।

(८) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (संशोधन) बिल।

(९) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (संशोधन) बिल।

३२, भारत सरकार के १९६४–६५ के माली साल की आमदनी और खर्च के अंदाज का ब्यौरा आपके सामने रखा जायगा।

३३. संसद् सदस्यगण! मेरी कामना है कि आपको अपने कार्य में सफलता मिले। मुझे पूरा विश्वास है कि विवेक, सहनशीलता और सहयोग की भावना से आप लोग काम करते रहेंगे । मेरी शुभकामना है कि आपके प्रयत्नों से हमारे देशवासियों को अधिकाधिक सुख और संतोष प्राप्त हो, हमारी मातृभूमि सुस्थिर और सुरक्षित रहे और संसार में शांति और सहयोग की भावना समुन्नत हो।

(Text *of the Vice-President's Address* in *English)*

Members of Parliament, I am happy to welcome you once again to your labours in a new session of Parliament.

2. In the year which has just ended, the Government and the peopli; of India have had to face problems which were vast in magnitude and complex in character. In spite of difficjlties and distractions, we have continued to move forward towards our objective of a democratic and socialist order at home and for peace and cooperation in international affairs.

3. The mid-term appraisal of our Third Five Year Plan undertaken by the Planning Commission has revealed that the ground to be covered in the remaining two years is considerable and an all-out effort would be required to realise our expectations.

4. While attention in the re-appraisal has necessarily been focussed on the sectors where we seem to be lagging behind the targets which had been set, it is important not to overlook or minimise the progress that has been made and the achievements which are in sight. The upward trend in industrial production has been maintained. The general level of industrial output in 1963-64 is expected to be 7 to 8 per cent higher than in the previous year. Basic industries, like coal and steel, have made further progress and production in the steel plants is running at near capacity. While power shortages have been felt in certain parts of the country, the total availability of power has improv-ed and the transport position is easier. There has been an improvement in export earnings and with continuing external assistance from friendly countries, our foreign exchange reserves and the country's balance of payments position have not been under the same kind of pressure as in the previous year.

5. Public sector undertakings have made significant progress. The first Indian-manufactured[1] A.C. electric-locomotive rolled out of the Chittaranjan Locomotive Works on November 16, 1963. The Heavy Electrical Plant at Bhopal has increased its output. The National Mineral Development Corporation has practically completed the development of Kiriburu iron ore mines. The Oil and Natural Gas Com. mission has established the existence of substantial reserves of oil and gas in Gujarat. The Atomic Energy Establishment at Trombay has begun exporting radio isotopes,

6. A number of new projects are in various stages of implementation and will add fresh strength to our economy in the years ahead. The expansion schemes of the three public sector steel plants are well under way. Work on the Alloy and Tool Steel Plant at Durgapur is in progress. Action has been initiated for the setting up of the steel plant at Bokaro.

Agreements have been signed with the United States of America and wiih Canada for the setting up of atomic power stations at Tarapore and Rana Pratap Sagar in Rajasthan respectively. With the other plants under construction for which the necessary external assistance has already been secured, we shall not,be far short of our Third Plan target and advance action on additional power plants to take care of our needs in the early years of the Fourth Plan has been initiated.

7. Despite these satisfactory trends, the overall rate of economic growth has lagged behind the Plan targot. This is mainly due to the shortage in agricultural production which in 1962-63 showed a fall of 3:3%. There have been successive ba^ agricultural sea sons in the course of the Third Five Year Plan. A steady increase in agri cultural production is the most important task before us today.

8. There has been a steady expan sion in the overall agricultural effort during the first two years of the Third Plan. About six m.llion acres of additional area have been brought under irrigation. Efforts are being made to extend irrigation facili ties to over 5-5 million acres during the current year. Additional allocations of Rs. 19-15 crores have been made to the State- for stepping up minor irri gation, soil conservation and agricul tural production.

9. Shortfalls in the production of foodgrains have had a disturbing effect on price levels. Through larger re leases of foodgrains from Government stocks, the setting up of additional fair-price shops wherever feasible and appropriate regulation of movements, and through credit policies, every effort has been made to prevent prices of foodgrains from shooting up. Con trol over the ex-factory price and distribution of sugar was reimposed in April, 1963.

10. In the long run, however, the stability of prices, whether of agricul- j tural or industrial products, can only ' be achieved through higher produc-I tion to match the rising level of consumption. I have referred to some of the measures which we have taken to strengthen the agricultural sector and increase agricultural production. These and other measures, together with the policy of price support for major agricultural crops, should raise the levels of production and productivity in agriculture.

11. To accelerate the pace of development in industry, various administrative changes have been introduced, procedures are being simplified and certain controls have been relaxed. Finance, both for agriculture and industry, particularly the co-operative sector and small-scale industries, is being made available on an increasing scale.

12. To improve the tone of administration and to deal effectively and promptly with complaints of corruption or lack of integrity, it has been decided to set up a Central Vigilance Commission which will have a status in its own sphere broadly corresponding to that of the Union Public Service Commission. Its annual reports wiH be placed before both Houses of Parliament.

13. Legislative Assemblies with Councils of Ministers were constituted in July, 1963, in the Union Territories of Himachal Pradesh, Manipur, Tripura and Pondicherry and a similar set up was established in the territories of Goa, Daman and Diu in December last. The State of Nagaland was formed on December 1, 1963, and elections to the Legislative Assembly were held in January, 1964.

14. The Chinese threat has continued throughout the year, though there has been no actual fighting along our borders. China still maintains its intransigent attitude on the Colombo proposals and Chinese military buildup along our borders has increased.

15. Dedicated as we are to peace and to the policy of peaceful settlement of all international disputes, we cannot afford to neglect our defences. During the course of the year, many steps were taken to improve and expand our Army and Air Force, The response to our demand for recruits to the Armed Forces has been satisfactory in all branches, but we are facing a dearth of qualified personnel for our Technical Services. The conditions of service of Armed personnel have been improved in many ways. The more important measures include revision in the rates of pension of Commissioned Officers, liberalisation of pensionary benefits to widows and other dependents of deceased personnel below officer rank and *ad hoc* increases in small pensions.

16. In the matter of equipping our Forces, appreciable assistance has already been received from the; Governments of the United State;;, the United Kingdom and a number of Commonwealth countries and further assistance is on its way. The Government of the U.S.S.R, have supplied us with a number of transport aircraft and other equipment and are assisting us in establishing a supersonic aircraft factory in the country. We are grateful to all these countries for the help they have extended to us.

17. To keep our Defence Forces well-equipped. We are anxious to rely on domestic production to the maximum possible extent. We are trying to secure a strengthening of our production base for strategic industries by getting the necessary plant and machinery under the external assistance provided for our Defence. Production in the Ordnance Factories in 1963-64 is expected to exceed Rs. IOO crores as compared with Rs. 63 crores in 1962-63 and Rs. 41*45 crores in 1981-62.

18. In accordance with our declared policy, we have continued to seek friendly and co-operative relations

with all countries in the world ano we have been adhering to the policy of non-alignment and peaceful cor existence, which is receiving growing support and appreciation at a number of international gatherings and from the countries of West Asia and North Africa.

19. Our President had the privilege and pleasure of visiting the United States of America, the United Kingdom, Nepal, Afghanisthan and Iran, and of receiving the warm and generous welcome of their Governments and peoples. With a view to further promoting goodwill and friendship, I visited Ethiopia, Sudan and the United Arab Republic. In addition, a number of our Ministers and other high personalities visited various countries of the world, with the same end in view.

20. Our Government had the privilege of welcoming in this country as our honoured guests during the year: His Majesty the King of Laos; Their Majesties the King and the Queen of Nepal; His Majesty the King of Jordan; the Vice-President of the Republic of Cyprus; the President of the Executive Council of the United Arab Republic; the Prime Minister of the Somali Republic; the Premier of the Northern Region of the Federal Republic of Nigeria; the Premier of New South Wales; the U.S. Secretary of State; Earl Mountbatten of Burma; H.R.H. Crown Princess Margrethe of Denmark; and the Soviet cosmonaut Valentina Tereshkova Nikilaeva and her two colleagues.

21. We were shocked and grieved to learn of the assassination of President Kennedy. In his death, India lost a genuine friend and, the world, a great champion of peace and amity. We welcome the declaration made by President Johnson that he would continue the policies of the late President Kennedy in the great and difficult task of reducing tensions and maintaining world peace, as well as contributing to the economic development of

the less-developed countries of the world.

22. One of the most encouraging developments in international affairs has been the acceptance by the United States and the Soviet Union of the principle, subsequently adopted by the United Nations, of banning nuclear weapons from outer space. This and the Test Ban Agreement are significant first steps on the road to disarmament and genuine peace, which can be achieved only in a climate of mutual confidence and co-operative co-exist ence. We broadly agree with the principle underlying the proposal for an international agreement renounc ing the use of force in settling terri torial or border disputes made by Chairman Khrushchev, and hope that the principal Powers concerned will be able, in a spirit of mutual confi dence, to work out a satisfactory and acceptable agreement on this import ant suggestion,

23. Our relations with Nepal are most cordial and friendly and there is full understanding and sympathy in each country for the problems and aspirations of the other. We are continuing to extend assistance for Bhutan's economic and social development.

24. Members of Parliament are aware of the tragic loss that both India and Sikkim have sustained by the death of the late Maharaja of Sikkim. His son, His Highness Palden Thondup Namgyal, acceded to the "Gaddi" in December, 1963.

25. We are happy that Kuwait has now secured her rightful place in the United Nations. We rejoice in the independence of Kenya and Uganda and the early advent of freedom and independence to other territories in Africa. We look forward to developing closer relations with all these countries and to co-operating with them in tackling the many tasks of development which freedom brings in its wake.

26. We extend our full sympathy and support to the African people who are still under Portuguese colonH rule in their struggle for freedom anu independence and in the efforts being, made by all people of Africa ai., other countries of the world to put end to the policies of apartheid and racial discrimination practised by the Government of South Africa.

27. As regards our relations with Pakistan, I regret to say that there has been no desire on the part of Pakistan to reach any settlement. The Minister-level discussions on "Kashmir and other related matters" that began in December, 1962, broke up after five founds of talks on May 16, 1963, on an acrimonious note. Hopes for the success of these talks were, in fact, shattered by Pakistan concluding a border agreement with China ceding to China a large area of Kashmir which was under Pakistan's military occupation. In spite of this and other acts of collusion with China against India, our Government patiently pursued the negotiations, but the five rounds of talks clearly showed that Pakistan has no intention to reach a settlement on a rational and realistic basis and that its sole object in entering into these bilateral discussions was to gain propaganda advantage against India.

28. Despite these unfortunate developments, India continued to seek avenues for peaceful solution of Indo* Pakistan problems and to ignore, as far as was possible, the "Hate India" campaign that had been mounted in Pakistan. A renewed call was made by our Prime Minister for a "No War Declaration" between India and Pakistan, and for simultaneous efforts to solve Indo-Pakistan differences through peaceful methods. The Prime Minister's appeal was disregarded and the year ended with Indo-Pakistan

relations in a far worse condition than during 1962.

29. The heinous sacrilege committed by some anti-social elements in Kashmir who stole the holy relic from the Hazratbal shrine in the last week of December, 1963, caused serious concern to all people in Kashmir as well as the rest of India. The prompt action taken by our Government in assisting the local authorities in Kashmir in the investigations resulted in the recovery of the holy relic which was a matter of great joy and satisfaction to people all over India. The Pakistan authorities, however, exploited this incident to fan anti-Indian and communal feelings in Pakistan which led to serious disturbances and complete breakdown of law and order in vaious areas of East Pakistan including Dacca itself, resulting in the loss of several hundreds of lives of the minority community in East Pak stan and considerable loss of property belonging to the minority community. These incidents had repercussions in Calcutta and certain areas of West Bengal and Government took prompt and firm action against the miscreants and gave full protection to the life and property of all citizens of India, irrespective of their caste or creed. Our President also made a proposal for a joint appeal by the Presidents of India and Pakistan to restore p?ace and harmony amongst the various communities living in the two countries and suggested certain prac ical steps to follow up this appeal. Pakistani response to these proposals has so far been negative. The disturbances in East Pakistan have taken a heavy toll of the lives and properties of the members of the minority community in various areas of East Pakistan. As a result, we are faced with a large influx of the members of the minority community from East Pakistan into India.

30. Members of Parliament, I have placed before you an account of our main achievements and problems of the past year. I have also given you a brief picture of the tasks (ind burdens that face us. They need your dedicated attention, understanding and co-operation in increasing measure. It will continue to be the endeavour of our Government, in all possible ways, to uphold the dignity and independence of our land and people, to promote our unity and well-being and to build a democratic and socialistic society in which progress is sought and attained by peaceful means and by consent.

31. 58 Bills were passed by Parlia ment during 1963. 19 Bills are pend ing before you. Among the Bills that will be placed before you for your consideration will be: —

(1) The Companies (Amendment) Bill.

(2) The Indian Crop Insurance Bill.

(3) The Standards of Weights & Measures (Amendment) Bill.

(4) The Indian Railways (Second Amendment) Bill.

(5) Bill to repeal the Bombay Co-operative Societies Act, 1925, as applicable to the Union Territory of Delhi and to extend the Punjab Cooperative Societies Act, 1961, with certain modifications to Delhi.

(6) The Foreign Exchange Re gulation (Amendment) Bill.

(7) The Constitution (Eighteenth Amendment) Bill.

(8) The Banaras Hindu "Univer sity (Amendment) Bill.

(9) The Aligarh Muslim Univer sity (Amendment) Bill.

32. A statement of Estimated Receipts and Expenditure of the Government of India for the financial year 1964-65 will be laid before you.

33. Members of Parliament, I wish you success in your labours. I earnestly trust that wisdom and tolerance and a spirit of co-operative effort will guide you. May your endeavours bring increasing prosperity and contentment to our people, stability and security to our Motherland and

assist in promoting peace and co-operation in the world.

STATEMENT OF BILLS ASSENTED TO BY THE PRESIDENT

SECRETARY: Madarn, I beg to lay on the Table a statement showing the Bills which were passed by Parliament during the Forty-fifth Session of the Rajya Sabha and assented to by the President:

1. The Industrial Employment (Standing Orders) Amendment Bill, 1963.
2. The Public Premises (Eviction of Unauthorised Occupants) Amendment Bill, 1963.
3. The Textiles Committee Bill, 1963.
4. The Drugs and Magic Remedies (Objectionable Advertisements) Amendment Bill, 1963.
5. The Income-tax (Amendment) Bill, 1963.
6. The Appropriation (No. 5) Bill, 1963.
7. The Administrators-General Bill, 1963.
8. The Appropriation (Railways) No. 6 Bill, 1963.
9. The Specific Relief Bill, 1963.
10. The Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill, 1963.
11. The East Punjab Ayurvedic & Unani Practitioners (Delhi Amendment) Bill, 1963.
12. The Indian Tariff (Second Amendment) Bill, 1963.
13. The Preventive Detention (Continuance) Bill, 1963.
14. The Unit Trust of India Bill, 1963.
15. The Companies (Amendment) Bill, 1963.
16. The Central Board of Revenue Bill, 1963.
17. The Banking Laws (Miscellaneous Provisions) Bill, 1963.
18. The Delhi Development (Amendment) Bill, 1963.

PAPERS LAID ON THE TABLE

REPORT OF RAILWAY ACCIDENTS COMMITTEE, 1962 (PT. II AND SUMMARY OF OBSERVATIONS AND RECOMMENDATIONS WITH RAILWAY BOARD'S COMMENTS

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI SHAH NAWAZ KHAN): Madam, I beg to lay on the Table a copy each of the following papers: —

(i) Report of the Railway Accidents Committee, 1962 (Part II).

(ii) Summary of Observations & Recommendations contained in Part II of the Report of the Railway Accidents Committee—1962, and Railway Board's *comments* thereon.

[Placed in Library. *See* No. LT-2230/ 64 for (i) and (ii)].

OBITUARY REFERENCE

THE DEPUTY CHAIRMAN: 1 now rise to share with you my own deep feeling of sorrow at the passing away of Rajkumari Amrit Kaur. Her memory is still fresh with us and we feel that she is there sitting in her seat.

A brilliant woman and a good woman, her voice was gentle and firm, her personality sensitive and refined, her spirit dauntless. Her strength lay in her vigour, courage and outspokenness.